



वैदिक धर्म-दर्शन एक जीवन पद्धति

पिछले दशाब्द में भारत के उच्चतम न्यायालय (Supreme Court) ने अपने एक निर्णय (दिनांक 11-12-1995) में यह कहा था, कि वैदिक धर्म-दर्शन कोई Religion (मजहब) नहीं है, वह तो एक “जीवन पद्धति” (Way of Life) है, अर्थात् सुखी और स्वस्थ जीवन जीने की एक विधा अर्थात् कला है। ऐसा प्रतीत होता है, कि उस समय न्यायालय के समक्ष “वैदिक-धर्म” का सांस्कृतिक पक्ष ही प्रस्तुत किया गया था। परिणामस्वरूप मानव धर्म के मूल प्राकृतिक सिद्धांतों जैसे (i) चक्र / परिवर्तनशीलता/ पुनर्जन्म का सिद्धान्त, (ii) अनुलोभ-विलोभता का सिद्धान्त, (iii) कर्म का सिद्धान्त, (iv) निष्काम-कर्म (यज्ञ) का सिद्धान्त (v) मोक्ष का सिद्धान्त (vi) यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे आदि से सम्बन्धित जानकारी विश्व समाज को मिल ही नहीं पायी। इन प्राकृतिक सिद्धांतों का ज्ञान तथा इन्हें जीवन में धारण करने से ही मानव का समग्र विकास होता है और यही जीवन जीने की वह विधा अर्थात् कला (Art) है; जिस पर बहुत कम मनीषियों ने चिन्तन किया लगता है, अतएव इस विधा पर निम्न पंक्तियों में संक्षिप्त रूप से प्रकाश डालने का प्रयास किया जा रहा है।

धर्म का अर्थ:- उपरोक्त निर्णय ने यह बात तो साफ कर दी है, कि धर्म का वह संकुचित अर्थ नहीं है, जो जनसाधारण समझता है अर्थात् वह पूजा-विधि, जो मन्दिर, मस्जिद एवम् गुरुद्वारा आदि में जाकर लोग एक विशिष्ट प्रकार (Ritual) से करते हैं तथा उसे ही धर्म समझ लेते हैं, ऐसा ठीक नहीं है, अपितु धर्म का अर्थ है, जिसको जीवन में धारण अर्थात् अपनाने से मानव मात्र का जीवन स्वस्थ व आनन्दमय बनता है, समाज व राष्ट्र समृद्ध बनता है और सम्पूर्ण मानवता सुखी जीवन जीती है। संक्षेप में समझें, तो धर्म वह है, जिसे जीवन में पालन किया जाये, अपनाया जाये अर्थात् आचरण में लाया जाये। उदाहरणार्थ “सत्यम् वद् धर्मम् चर” विचार को ही लें, जिसे महाराज युधिष्ठिर ने अपने जीवन में धारण किया था और वह विचार हम सब को किस प्रकार सुखी बना सकता है, इस बात को समझने हेतु पहले हमें यह समझना होगा, कि जीवन का आधार क्या है तथा मानव जीवन के लक्ष्य क्या हैं ?

1. जीवन का आधार:- विश्व में अधिकांश मानवों का यह विश्वास है, कि ईश्वर है तथा जैसे एक मकड़ा अपने मुँह की लार से अपने चारों ओर ताना-बाना बुन लेता है, ठीक उसी प्रकार परमात्मा भी अपने शरीर से ‘प्राण-ऊर्जा’ को उत्पन्न करता है और इस सृष्टि का निर्माण तथा उसका संचालन करता है और फिर इसे अपनी इच्छा से समेट भी लेता है। हम सभी जीवात्माएँ उस सृष्टि कर्ता के द्वारा बनाए गये ‘कर्म विधान’ के आधीन सुख-दुख, पाप-पुण्य एवम् जन्म-मृत्यु के चक्र में निरन्तर भ्रमण करती रहती हैं। अतएव यही विधान ही जीवन का आधार है।

2. मानव जीवन के लक्ष्य:- इस विषय पर भारतीय मनीषियों ने बहुत गहराई से अध्ययन किया और प्रकृति के अनेक रहस्यों को उजागर किया तथा मानव को पूर्ण रूप से सुखी बनाने हेतु निम्न सूत्रों का प्रतिपादन भी किया ।

(i) स्वस्थ एवम् सुखी जीवन कैसे जिया जाये ? (ii) सुखव मृत्यु कैसे हो ? (iii) मृत्यु एवम् जीवन के चक्र को कैसे तोड़ा जाये अर्थात् मोक्ष की प्राप्ति कैसे हो ?

3.(i) वैदिक वाङ्मय के आधार:- उपरोक्त लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु उन्होंने तीन आधार बनाए तथा साहित्य में उन तीनों का यथोचित समन्वय भी किया, ताकि वह वाङ्मय सभी वर्गों के साधकों/ विद्यार्थियों को रुचिकर और ग्राह्य हो सके । ये तीन आधार हैं : (i) साहित्य (ii) कला एवम् (iii) विज्ञान ।

(ii) साहित्य, कला एवम् विज्ञान का समन्वय:- वेदों, उपनिषदों एवम् अन्य सभी भारतीय ग्रंथों का यदि ध्यान से अवलोकन किया जाये, तो स्पष्ट हो जायेगा, कि इन सभी की रचना प्राकृतिक सिद्धान्तों अर्थात् विज्ञान के सिद्धान्तों पर आधारित है, परन्तु इन वैज्ञानिक सिद्धान्तों को सरस एवम् सुरुचिपूर्ण बनाने हेतु उन्हें कथाओं, कहानियों, सम्वादों, काव्यों, प्रतीकों, मिथकों, कलाकृतियों, संगीतों, नृत्यों आदि के आवरण में लपेट दिया गया। यह कार्य ऐसे ही किया गया है, जैसे कि प्रकृति ने अंगूर के रस और गूदे के बीच एक छोटा-सा बीज छिपा कर रख दिया होता है।

(iii) समन्वय के श्रेष्ठ उदाहरण:- गीता, उपनिषद, पुराण, रामचरितमानस आदि उच्च कोटि के ग्रंथ सम्वादों, प्रतीकों, मिथकों के सुन्दरतम उदाहरण हैं । जैसे :- शिव-पार्वती सम्वाद; काकभुशुण्डि-गरुड़ सम्वाद; याज्ञवल्क-भरद्वाज सम्वाद; श्रीकृष्ण-अर्जुन सम्वाद, गोपियाँ एवम् उद्धव सम्वाद तथा राजा परीक्षित-श्री शुकदेव सम्वाद। जन साधारण को इस प्रकार की भाषा ही रुचिकर लगती है । यह मनोवैज्ञानिक सत्य है । भारतीय वाङ्मय में शायद ही कहीं पर इस प्रकार का लेखन हो, जहाँ पर किसी महापुरुष ने अथवा उपदेशक ने सीधे-सीधे यह आदेश (Command) दिया हो, कि “तू ऐसा कर, तू वैसा कर”, नहीं तो तेरा यूँ अनिष्ट हो जायेगा अथवा तुझे यह सजा मिलेगी आदि । इस प्रकार की भाषा किसी भी प्रबुद्ध श्रोता के स्वाभिमान को सदैव चोट पहुँचाती है ।

4. सुखी जीवन का अर्थ:- लोक में प्रचलित एक कहावत है, कि जीवन में पहला सुख है “निरोगी काया” और दूजा सुख है “घर में हो माया” परन्तु आज हमने अज्ञानतावश इस सच्ची लोकोक्ति को पलट दिया है । जैसे कि:- पहला सुख है “घर में हो माया” और दूजा सुख है “जैसी तैसी हो काया” अर्थात् चाहे रक्तचाप के कारण मन चिड़चिड़ा बना रहे; अथवा मधुमेह (Diabetes) के कष्ट से भोजन भी

दूभर हो जाय अथवा अन्य कोई भी बीमारी क्यों न रहे, लेकिन धन कमाओ; खूब कमाओ, किसी प्रकार से भी कमाओ और बाद में डाक्टर को देकर स्वास्थ्य लाभ की मृग-मरीचिका में चक्कर लगाओ ।

यह बतलाने की आवश्यकता नहीं है, कि आज पश्चिमी संस्कृति के मोह ने भारतवासियों को किस प्रकार गुमराह कर रखा है और 90% से भी अधिक जनता अनेकानेक कष्टों से पीड़ित है । यौवन आने से पूर्व ही मोटे-मोटे चश्मे, श्वेत बाल, मधुमेह एवम् रक्तचाप आदि की शिकायतें आम बातें होती जा रही हैं । इन कष्टों की तह तक जाने के लिए कुछ वैज्ञानिक पृष्ठभूमि की जानकारी आवश्यक है, जिसका विवरण निम्न प्रकार से है ।

5. पदार्थ निर्माण की प्रक्रिया:- विज्ञान यह बतलाता है, कि चुम्बकीय विद्युत तरंगों (Electro Magnetic Waves) से कणों (Particles) का और कणों से परमाणुओं (Atoms) का और परमाणुओं से अणुओं (Molecules) का निर्माण होता है और फिर सम्पूर्ण दृश्यमान पदार्थ जगत बन जाता है । रसायन-शास्त्र (Chemistry) में वर्णित मेंडलीफ की Periodic Table उन सभी पदार्थों के सृजन की संघात अवस्था (Constituent State) अर्थात् किन-किन कणों से मिलकर वह मूल तत्व बना है, उसकी जानकारी देती है । उदाहरणस्वरूप लोह में प्रोटॉन्स की संख्या 26 होती है तथा इस पदार्थ का Atomic Mass = 55.847 है । इसी प्रकार स्वर्ण के पदार्थ में प्रोटॉन्स की संख्या 79 है, जबकि Atomic Mass = 196.9665 है । यह जानकारी मात्र पदार्थ की रचना को बतलाने हेतु दी गयी है ।

6. मानव शरीर रचना एवम् नियमन:- मानव शरीर की रचना भी कणों (Particles), परमाणुओं (Atoms) एवम् अणुओं (Molecules) का संघात (योग) मात्र है । एक और क्रिया जो प्रकृति में सर्वत्र और निरन्तर चलती रहती है, वह है अणुओं-परमाणुओं-पदार्थों के सृजन (Creation) के साथ-साथ विघटन (Dissolution) की क्रिया । पूरी सृष्टि में असंख्य तारे (सूर्य) हैं, जो निरन्तर अपने शरीर से चुम्बकीय विद्युत तरंगें छोड़ते रहते हैं और वे तरंगें छोटे पिण्ड ग्रहण करते हैं । छोटे पिण्ड फिर इन्हीं तरंगों को आगे प्रसारित कर देते हैं । आकाशगंगा में स्थित सूर्यों को नक्षत्र एवं इनके समूह को राशियों के नाम से जाना जाता है । ये तरंगें नक्षत्रों/ राशियों से चलकर पृथ्वी के चारों ओर स्थित ग्रहों से टकराती हैं और फिर पृथ्वी पर रहने वाले प्राणियों को ऊर्जा प्रदान करती हैं (कृपया ऊर्जा वर्षा का चित्र संख्या-1 देखें)। सूर्य से आने वाले प्रकाश को

ब्रह्माण्डीय ऊर्जा
(आवेशित कणों) की वर्षा



चित्र संख्या -1

ग्रह पिण्ड सात रंगों की पट्टिका 'VIBGYOR'^a के क्रम में पृथ्वी पर बिखेरते हैं तथा ये रंग मानव-जीवन की हर घटना का नियमन करते हैं ।

7. प्राण शक्ति का प्रसारण एवम् मृत्यु:- पूरी सृष्टि में यह कार्य अर्थात् चुम्बकीय विद्युत तरंगों के प्रसारण का कार्य हर जीवित प्राणी अर्थात् चींटी से लेकर मानव, पशु-पक्षी, वृक्ष आदि सभी निरन्तर करते रहते हैं । भारतीय ऋषियों ने इसे 'आदान-प्रदान क्रिया' अथवा 'यज्ञ' की संज्ञा दी है । जब तक प्रकृति में यह "यज्ञ" चलता रहता है, प्रकृति जीवित रहती है । जब जिस पिण्ड की चुम्बकीय विद्युत तरंगों का निस्सरण समाप्त हो जाता है, वह मृत होकर अदृश्य हो जाती है । ऐसे सभी सूर्यों के अदृश्य होते ही उस आकाशगंगा (Galaxy) का कार्यकाल समाप्त हो जाता है । वेदों में हमारी आकाशगंगा का कार्यकाल इकतीस नील, दस खरब, चालीस अरब वर्ष बतलाया गया है । इस चुम्बकीय विद्युत शक्ति (Electro-Magnetic Energy) को ही संस्कृत भाषा में प्राण-ऊर्जा के नाम से कहा गया है । प्राण दो शब्दों के मेल से बना है:- 1. ओज (Magnetic Energy) एवम् 2. तेज (Light Energy) । चूँकि प्राण-ऊर्जा ही जीवन का आधार है, अतएव जहाँ 'प्राण' का स्पन्दन है, वहीं जीवन स्वतः स्पन्दित होने लगता है । परमात्मा तो पूरे ब्रह्माण्ड में फैली एक विशाल चादर के समान है, जिस पर चुम्बकीय विद्युत तरंगों का खेल सतत् चलता रहता है । यह खेल उसी प्रकार से है, जैसे कि सिनेमा के पर्दे पर प्रोजेक्टर द्वारा डाले गये प्रकाश से उत्पन्न फिल्म का दर्शकगण तीन घण्टे तक आनन्द लेते हैं ।

उपरोक्त सिद्धान्त मानव शरीर पर भी लागू होता है, अर्थात् जब यह 'आदान-प्रदान क्रिया' मानव शरीर में भी पूर्ण रूप से समाप्त हो गयी होती है, तो वह मृत हो जाता है तथा यह मानव पिण्ड जिस अंश में इन चुम्बकीय विद्युत तरंगों के महासागर से जितना कम 'प्राण-ऊर्जा' को ग्रहण कर रहा होता है अथवा अनेक कारणों से कम ग्रहण कर पाता है, उतने ही अंश में वह अस्वस्थ तथा चिड़चिड़ा, उदास, व दुःखी रहता है । इस सूत्र को अर्थात् सुखी जीवन एवम् स्वस्थ जीवन जीने के रहस्य को भारतीय ग्रंथों में अनेकों प्रकार से बतलाया गया है । इन्हीं विधियों का संग्रह वेदों, उपनिषदों, पुराणों आदि में किया गया है । सम्पूर्ण वैदिक वाङ्मय को यदि उपरोक्त तीन लक्ष्यों में पिरोया हुआ समझ कर हम अध्ययन करें, तो किसी प्रकार की भ्रान्ति नहीं होगी और वेदों का ज्ञान सार्वभौमिक भी लगेगा, क्योंकि इस वाङ्मय में जो समग्रता की दृष्टि पिरोयी गयी है, वह अभूतपूर्व है, परन्तु इस बात से भी इन्कार नहीं किया जा सकता, कि समय के लम्बे अन्तराल से वैदिक ज्ञान में अनेक भ्रान्तियाँ प्रवेश कर गयी हैं; जिन्हें मात्र वैज्ञानिक दृष्टि से ही दूर किया जा सकता है तथा विज्ञानसम्मत ज्ञान को ही जीवन दर्शन बनाने से मानव का कल्याण सम्भव है । यह वैदिक-ज्ञान तभी पुनः सार्वभौमिक एवम् सार्वजनीन भी बन सकेगा ।

8. प्राण ऊर्जा का अवरोध:-जीवित अवस्था में मानव शरीर में प्राण-ऊर्जा का प्रवेश अधिकांशतः सहस्रार के मार्ग से होता है । इस ब्रह्माण्डीय-ऊर्जा को ग्रहण करने के

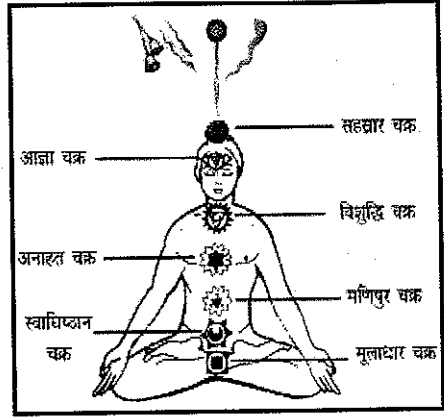
a VIBGYOR का अर्थ है निम्न सात रंगों की पट्टिका :-

V = Violet, I = Indigo, B = Blue, G = Green, Y = Yellow, O = Orange, R = Red

लिए चोटी (Apex) एक सशक्त माध्यम था, जो अब पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव में आकर कटवा दी गयी है। यह प्राण-ऊर्जा रीढ़ की हड्डी के भीतर सुषुम्ना मार्ग से मूलाधार तक जाती है तथा व्यक्ति की स्वयं की प्राण-ऊर्जा से मिलकर सभी सातों चक्रों को अनुप्राणित करती है। ये सातों चक्र विभिन्न अंगों में जाने वाले ऊर्जा प्रवाह के केन्द्र स्थल हैं। ऐसा प्रतीत होता है, कि अपान वायु के उर्ध्वगमन के कारण किसी भी चक्र में शक्ति प्रवाह अवरुद्ध हो जाता है। इस प्रकार सम्बन्धित अंगों में प्राण का प्रवाह शिथिल अथवा अवरुद्ध सा रहता है। तब वह अंग बीमार

हो जाता है अथवा शिथिलता से कार्य करता है और हमारे मन व शरीर की अवस्था बीमारी जैसी रहती है (कृपया सुषुम्ना में हो रहे शक्तिप्रवाह का चित्र संख्या-2 देखें)

सुषुम्ना में 'शक्ति-प्रवाह'



चित्र संख्या -2

9. चर्चा के विषय:- इस बात को समझने हेतु हमें पहले यह जानना होगा, कि मानव शरीर की यह दशा क्यों और कैसे होती है और उनको दूर करने के क्या उपाय हैं। इन्हीं बातों को अगले लेखों में कई भागों में क्रमशः चर्चाओं द्वारा पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। इस क्रम में विश्व ऊर्जा की उत्पत्ति एवम् प्रसार की पहली चर्चा की गयी है, जिससे सृष्टि निर्माण एवम् पालन का क्रियाकलाप समझ में आ सके। आकाशगंगाओं की दौड़ के कारण गतिज ऊर्जा (Kinetic Energy) की निरन्तर उत्पत्ति हो रही है, इस बात को दर्शाते दो लेख संलग्न हैं:- 1. 'ॐ' का प्रादुर्भाव एक वैज्ञानिक विश्लेषण' एवम् 2. मानव धर्म का आधार-गायत्री मंत्र',। तत्पश्चात् "प्राण-विज्ञान के शब्दों में" नामक लेख द्वारा मानव शरीर में प्राण-ऊर्जा की अवरुद्ध गति के कारण किस प्रकार अनेकानेक रोगों का जन्म होता है, इस पर प्रकाश डाला गया है। पुनः उन कारणों पर भी प्रकाश डाला गया है, जिनके कारण रोगोत्पत्ति होती है और फिर उन रोगों को दूर करने के उपायों पर भी चर्चा की गयी है। इस प्रकार स्वस्थ एवम् सुखी जीवन जीने की कला का समापन किया गया है। इस सम्बन्ध में (a) सूक्ष्मता का सिद्धान्त (b) होम्योपैथी के सम्बन्ध में कुछ बातें पुस्तक के भाग-2 में तथा (c) Scientific Analysis of Homoeopathy नामक लेख भाग-3 में देखें। इसके अनन्तर जीवन के दूसरे व तीसरे लक्ष्यों अर्थात् सुखद मृत्यु कैसे हो तथा आवागमन का चक्र कैसे टूटे, इन पर संक्षिप्त चर्चा पुस्तक के भाग-2 के चौथे एवम् पाँचवें सर्त्रों में की गयी है। पुस्तक में यथासम्भव पूरी जानकारी देने का प्रयास किया गया है। आशा करता हूँ, कि सुविज्ञ पाठक इससे लाभान्वित होंगे।

➔ हरिः ॐ तत् सत् ! ➔